༄༅།།བོད་ཀྱི་རང་བསྐྱེད་དབེ་ཚོགས་ལྷེ་གནས།།

Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W4CZ74095	***ImageGroup:***	I4CZ74147
LCCN:	n/a	***ISBN:***	n/a

Title:	རྟ་མགྲིན་སྐྱེར་སྒང་ལུགས་ཀྱི་ལས་བྱང་ཁག་གཉིས། rta mgrin skyer sgang lugs kyi las byang khag gnyis/
Author:	n/a
Descriptor:	n/a
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	am mdo
Publisher:	ko'i sde dgon pa
Date:	[n.d.]
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Tibetan Buddhist Resource Center, 1430 Massachusetts Avenue, Cambridge, MA 02138 US.

།།ཨོཾ་ སྡོམ་གྱི་བསམ་པ་བའི་དང་པོ་ལ། རྩ་བའི་ཚིག་གསུམ་མོ། ཚེས་སྐྱེ་སྡུང་བཞད་ལོངས་སྤྱོད་ཕུན་ཚོགས། ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡི། ཞེས་སྐྱེས་ཤིང་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་བདག་ཏུ

ཐམས་པང་ཐུང་པོ་ཚུལ་བྱེམས་ཤ་ཙོན་བོད་ཞབས། །བྱས་པ་རྣམ་ཚེ་རྒྱ་དེན་ཡོང་རྒྱལ་མཆོག་དཔལ། །ཅན་དགའ་
རྒྱལ་མཆོག་དགེ་འདན་རྒྱ་མཆོག་སྐྱེ། །ཞེས་བ་ཐ། ཚོས་རྣ་ཡོན་མཆོག་བསོད་ནམས་རྒྱ་མཆོག་དཔལ། ཁྱེ་ཏེ་
ལྷ་བཙུན་དཔལ་ཀུན་ཏུ་བཟང་བ་རྣ། །ཚོས་དབྱངས་རང་སྐྱོལ་རྣ་བའི་ལྷ་མ། །ཞེས་བ་ཐ། ལྷུན་པང་སྐུ་ཞབས་
འཚང་དབང་ལྷུག་རབ་ཟབ་ཆོས་ཤེས། །དཀོན་མཆོག་དཔལ་འཕྲོ་དམ་བཅུ་བྱིན་ལེགས་རྣམ། །ངག་དབང་བློ་གོས་རྣ་
བའི་ལྷ་མ། །ཞེས་བ་ཐ། དབང་དག་ཁྱོ་རྒྱལ་རྣ་མཆོག་རོལ་བའི་ལྷ། །མ་རང་མཁའ་འགྲོ་དམ་ཅན་ཆོས་སྐྱོང་ཚོགས།

།།ཨཱ། ། ཤཀྱེར་བྱེ་སྨུང་མ་ཁུལ་ལྟུ་ཀ་ཞེས་བདག་ལ། ཞབས་པད་མ་བཞད་མཁན་སེམས་རབ་ཚལ་ལ་ཉིན་
ཐ། ། ཐུབ་བདག་ཀུན་བཟང་ཚོ་འཕང་མ་ཐོབ་པར། ། དགོན་མཆོག་འདུས་པའི་བདག་ཉིད་རྣམ་པ་ཀུན་གྱི། ། དགེ་
འཕེར་ལྟུ་ཆོས་ལས་རྣམས་ལ་སྐྱབས་ལྟ་མཆི། ། སྐྱབས་འགྲོ་ལན་ཀུན་ལྟ། ། མཐའ་མེད་སྐྱེ་དགུ་ཚེར་དུས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བར་དུ། ། བྱང་
མེད་སངས་རྒྱས་ས་ལ་འགོད་པའི་ཚེར། ། དབང་ཆེན་ཏུ་མཆོག་རོལ་ཅ་སྐྱབ་པའི་ཐུགས། ། ཐབ་མོད་སྐྱབ་པ་ཁམས་སྤྲུང་
བར་ཟུ། ། སེམས་ཅན་སྐྱེད་ཁབ་ཀུལ་ཁ། ། ཤེས་སུ་རྟོག་ཐབས་རྟོག་བའི་དང་ལྡན། ། སེམས་རྟོག་སྐྱ་བསྐུལ་མེད་སྐྱར་རྟེ་

རབ་མཐར་རྒྱབ་བདེ་ལེ་ཧྲིག་ངར་གནས། །འཕྲོ་རྣམས་རབ་རས་རྒྱུས་ཐོབ་སྐྱེ་རྟེན། ཅ ཨོཾ་ཐུགས་རྩ་རྡོ་ཀ་ཨལ་དག་པ་ཐོག་ཏུ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཡིག་ཆ་ཐུགས་ཀར་ཨོཾ

།།ཨོཾ། དབུས་ཞལ་དམར་པོ་ཞལ་རེ་རེ་ལ་དམར་ལ། ཐུ་མ་བའི་སྐྱེན་གསུམ་སྣང་མེད་ཀྱི་ཏུ་བགྱད་པ། ཞལ་གདངས་
ཤིང་མཆེ་བ་རྩེབ་པོ་བཞི་བརྩེ་གསལ་པ་ཐུགས་སྤུའི་ལ་ཞིང་རྐ་རྟ་དང་རྐྱེ་རྐྱེ་དང་ཕར་ཕན་ཀྱི་སྐྱ་མེན་པོ་ཤ་ཁྲག་འཐུང་སྐོག་གསལ་
སྐྱིན་མ་དང་སྐྱེ་དགུ་སྐྱ་ཁམས་སེར་སྐྱེ་རྣ་བ་རྡོལ་པ་དབུ་རེ་རེའི་སྟེང་ན་ཏཱ་མོ་ལྟང་ཞབ་ཕྱོགས་དང་གཡས་སྒྲུབ་སྒྲུབ་པོ་
རོགས་མ་དམར་པོ། ཁ་གཅིར་དགའ་ཞིང་རྐང་ཨང་ལྟེང་བ་རོགས་པའི་ཁར་ཁ་ནས་ཀྱི་བ་ཁམས་ཀྱི་ཚངས་པ་འདྲེ་གཙང་རྟེན་
ནས་འོག་དབང་ཆེན་གཙོར་ཀྱེ་ར་གཞི་འཕྲག་གི་བར་ལ། ཐུགས་ཀ་ཡས་སྐྱེ་བོ་ནི་རྡུའི་གུར་ཀྱིས་ཤ་གཡོ། སྐུ་ག་ཡས་སྐྱེ་བོ་ནི་རྡོ་གཤེས་པ་ལ་ཁྲ

རྟ་ཀའི་མི་ཁགོ་སྡུམ་བཅུ་གསུམ་གྱི་སྡེང་རྩེ་གསུམ་གྱིས་ཁ་ཆོག་བ། གསུམ་པ་ནང་གཡའི་ལུ་བ་རང་ལ་བསྡུད་པ། གཡོན་གྱི་དང་རོལས་སྐེ་གང་ཐུབ། གཡེས་པ་ན་མདང་ཐུང་། གསུམ་པ་ནི་ཆུ་མའི་ཞགས་པ་བསྡམས་པ། ཐུང་ཆེན་གྱི་ཚོ་རྩོན་དང་། ཞོང་ཆེན་གྱི་གཡང་གཤོག་ཁ་ཡོག་པ། སྐྱ་གི་རཔས་པའི་ཅོམ་ཐབས་ཅན། མི་ཐགོའི་ཨཁ་རོ་ལུ་ལུའི་ང་། ཆུན་དང་བྱོན་པ་ལྷུ་བཅུའི་དོ་ཤལ་ཆུལ་པ། ཁྲག་གི་ཐོག་ལེ། ཞག་གི་རོང་རེས། ཐལ་ཆེན་གྱི་ཆོམ་ལུ་སྐྱག་པ། མི་ཨཁའི་ཆོང་ཨཁད་དང་རྩལ་པའི་ཆུན་དག་གིས་སྡོལ་པ། ཞབས་ཀ་ཁབས་བཞི་བསྐྱལ་ཞེང་། ཀ་ཡོན་བཞི་བསྐྱངས་ཁས་བླ་བཆུད་ཀྱི་ང་ཚེ་སྐྱལ་བཆུད་ཁཏེ་ཀ

ཀ། །ཤ། ཤེས་ཀྱི་དཔའ་བོ་འཇིགས་གྱུར་བ་དཀོན་དང་ཁའི་དང་སྐྱེ་རྟེ་རབ་ཏུ་རྟོག་པ་འབའ་ཞིག་ཏུ་ཟད་ཀྱི་ཐུབ་པ་ཡང་ཡོད་ཀྱི་ཐུབ་པ་ཡང་ཡོད་ཀྱི་ཐུབ་པ་ཡང་ཡོ

རང་ཉིད་རྒྱུད་ཆུང་ལའེས། ཐུབ་ཆེན་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་བསྟན་བདག་ལ་ཐིག་པའམ་སྐྱེ་སྐྲིག་ཚང་གཏོང་ཐུབ་སམ་སྙམ་ཞུས་པ་ལྟ་བུ་ཡི་དམ་ཚུལ་ལྟར་དངོས་དང་ཉེར་པར་མེད་པའི་ནུས་པ་ཐོབ་པ། སྐབས་ཀྱི་སྒྲུ་དང་ཚེར་མར་འཕྲོད། ཨཻ་མེད་རོལ་མཚན་དཔལ་གོང་ཁ་སྐུལ་དང་བཅས་ཏེ་འཕྲོད་རེས་མཁས་རྒྱུ་ཐོག་ཚོ་ཀུངས་བཅོས་པ། ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་ཀར་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཟེར་ཞུས་པ་ལས་ཁོང་གིས་ཀྱང་ཐུབ་སྙམ་ཞེས་ཟེར་བ་ལ་བཅོད། བ་ཐུབ་ཁེག་མའི་རིའི་རྩེ་ཁ་ནས་རྒྱབ་ཀྱི་ཐང་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པའི་དཔལ་ཡུལ་ཞེས་པ་ཞིག་ཡོད་ཟེར་བ་ལྟར་ཐུབ་ཆེན་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཐུགས་ཀར་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཟེར་ཞུས་པ། རྒྱལ་བཅོངས་དམ་གྱི་རོགས་ཀ་ཞིག་ཡིད་ལྷེ་བཀྲ་ཤིས་ཡོ་ཐུང་ཁ་སྐོང་ཚོགས་ཀྱིས་ཁང་

ཨཱཿ ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་སོ་མལ་དུ་རྒྱུ་བཀའ་པ་བཞིན་དུ་རང་གི་ཐུགས་ཀར་གསེལ་བཏབ་པ་ལྟར་སྤྲུལ་ཏེ་
དེ་ཐམས་ཅད་ཀུན་བྱེད་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བྱུང་བ་ཡི་ཐུགས་རྗེ་
ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་
པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བྱུང་བ་ཡི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་
ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་
ཀྱི་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་
མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་
དག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་དག་
ཏུ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་དག་ཏུ་
ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་

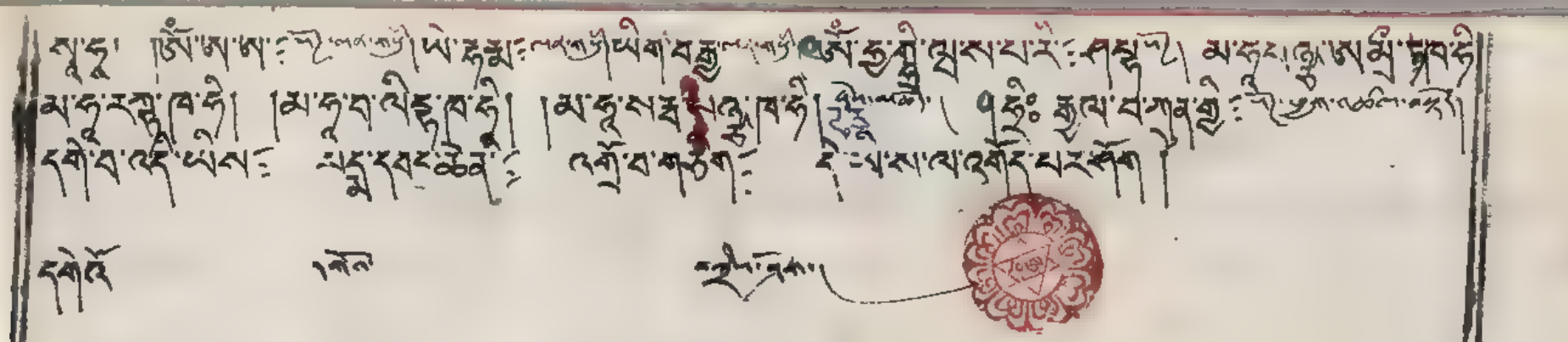

...

ཨཨཨ ཨཨཨཨཨཨཨཨ ཨཨཨཨཨཨཨཨ

ତାଲାଶ୍ରମରାଜାଗମା ଗଜୁରାଜ୍ଞୈଲାଯୁଧାଙ୍କୁଶାଜୁଷିଣା ଦ୍ୱୈପାଦ୍ରିଣା ରାଜ୍ଞାଷ୍ଟିଲ୍ୟାଲାୟନାଗୀଲ୍ୟୁଗା-
ତୀଜୈଲ୍ୟାଲପାଲାଶ୍ରୁଷିଗାଜୀରିଣାଗାଗୃହିଷ୍ଟୁଚ୍ଚିଗାଲୁଲାଗା ଗାଗାଗୁଲୀଜୀଲୁହଲୀଜୀଗାଲୀ-
ଗୁଲାଯାଗାଜିରାଗାଗାଲୁଲାଗରାଜୁରା ଦ୍ୱୈରାଗାଗାଗାଲାଦ୍ଗାଲାଗା ଗାଗାଗାଗୁଲୀଜୀଲୁହଲୀଗାଗା ଗୁଗା
ନଙ୍ଗଲାଗ୍ରିଗାଗୁରାଲାଙ୍ଗୀଗାଗାଗୁଲା ପୃଗ୍ରାଗାଗାଗାଗୁଲୀଗାଗାଗୁଲା ଗୀଙ୍ଗୀଜୀଗ୍ରାଲାଗାଗିରା
ଜୀ ଗ୍ରିଗାଗାଗାଙ୍ଗୀଗାଗିରାଗାଜିରାଗାଗା ଗଜୁଲାଗାଗୁରାଗିଗାଗୁରାଗାଗୁଗାଗରାଗାଗିଲା ରାଗାଗୁଗା

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमो हृषीकेशाय पद्मनाभाय दामोदराय
नमो नारायणाय वासुदेवाय प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः सङ्कर्षणाय

ꣳ ꣳ ꣳ

ཨཱཿ ཤཱནྟཱཏཱིཏཱ སྭཱཧཱ། ཏྲཱཾ ཤཱནྟཱཏཱིཏཱ ཏྲཱཾ ཨཱཿ

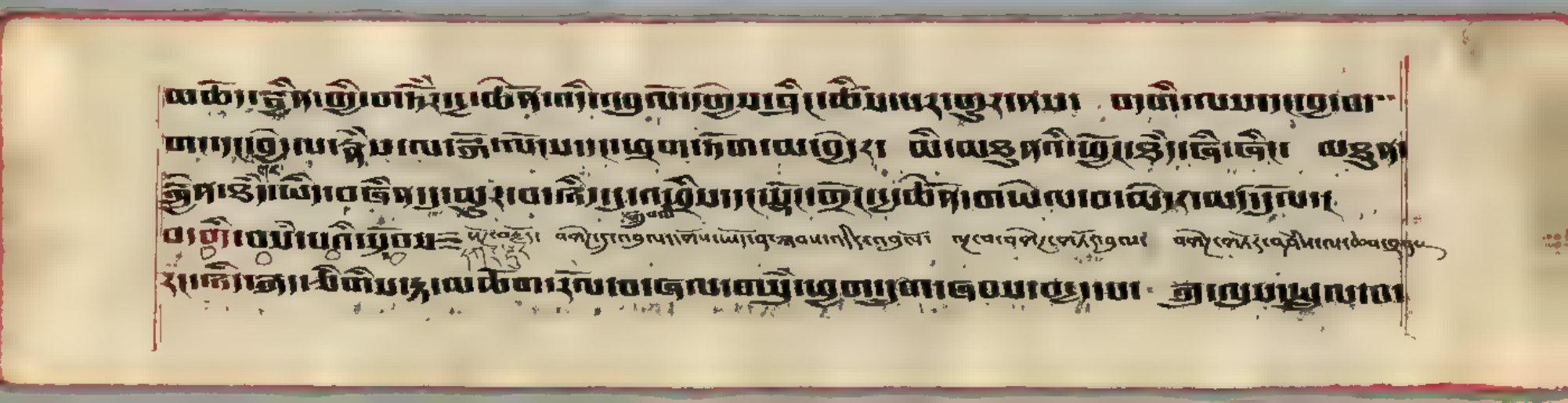

૨૦૦૦

ष्युपपादयितव्यमिति यथाप्रयोजनमुद्देशलक्षणपरीक्षाः क्रियन्ते। तद्यथोद्देशानर्थक्यं
हि लक्षणपरीक्षयोः। यदि पुनरयमुद्देशो लक्षणपरीक्षा-
वन्तरेणोपपादयितुं शक्यः। तत्रैषामुद्देशानामर्थक्यं स्यात्। तत्रैषामुद्देशानामर्थक्यं
यत्तावदुपपादयितव्यमिति। तदुपपादयितव्यमेव। कस्मात्। उद्दिष्टानां हि
लक्षणपरीक्षाः क्रियन्ते। उद्दिष्टानां च लक्षणपरीक्षाः क्रियन्ते। तस्मादुपपादयितव्यमेव।

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणाय महाभयोपशमनकराय सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वसत्त्वानां सर्वप्राणिनां सर्वभूतानां सर्वविषनिर्विषकराय सर्वग्रहनिग्रहकराय सर्वदुष्टनिवारणाय सर्वव्याधिविनाशनाय सर्वदुःखप्रशमनकराय सर्वपापक्षयकराय सर्वशत्रुसंहारकराय सर्वभयविद्रावणाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वदुष्टस्तम्भनकराय सर्वदुष्टविद्रावणाय सर्वदुष्टविनाशनाय सर्वदुष्टवशंकराय सर्वदुष्टविषनाशनाय सर्वदुष्टविषविनाशनाय सर्वदुष्टविषविद्रावणाय सर्वदुष्टविषस्तम्भनकराय सर्वदुष्टविषवशंकराय सर्वदुष्टविषनिर्विषकराय सर्वदुष्टविषसंहारकराय सर्वदुष्टविषप्रशमनकराय सर्वदुष्टविषक्षयकरा

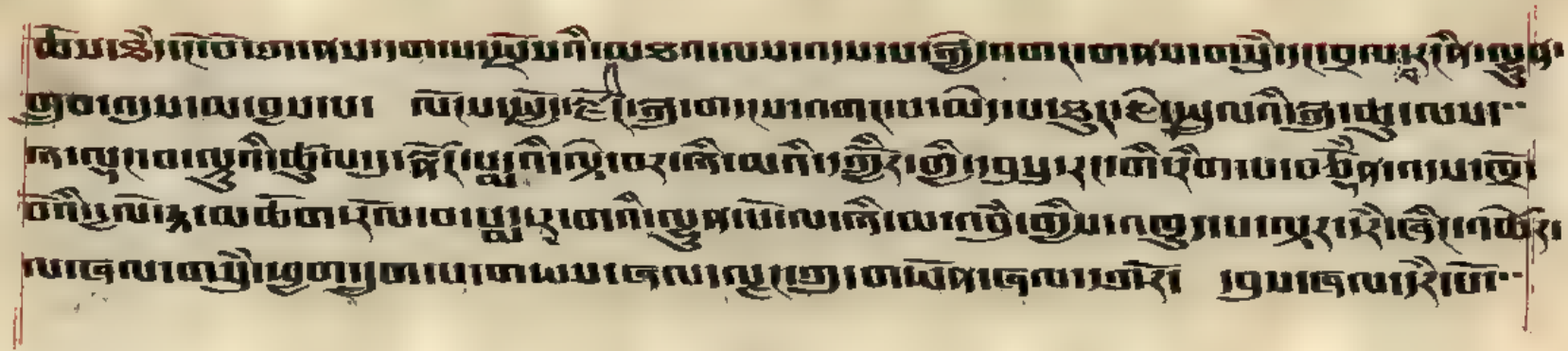

ꣳꣳꣳ

[illegible]

ཨཱཿ བཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ ཨོཾ་ཨ

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि स इद्देवेषु गच्छति ॥ अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः देवो देवेभिरा गमत् यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयं नमो भरन्त एमसि राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविं स नः पर्षदति द्विषः स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षा स्वस्तये नावेव सुप्रणीतये अस्मभ्यं वावशदुषो मरुत्वते मृळयते मनीषिणे अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः

ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो द्वे बन्धहेतू प्रज्ञप्ते तद्यथा ऐर्यापथिकश्च साम्परायिकश्च ॥ एवं यावत्पञ्चान्तरायिकस्य कर्मणो द्वे बन्धहेतू प्रज्ञप्ते तद्यथा ऐर्यापथिकश्च साम्परायिकश्च ॥ एतानि खलु भदन्त जीवानां ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो बन्धहेतवः कियन्तो भवन्ति ॥ गौतम पञ्च बन्धहेतवः कियन्तो भवन्ति ॥ गौतम पञ्च बन्धहेतवः प्रज्ञप्ताः तद्यथा मिथ्यात्वं अविरतिः प्रमादः कषायो योगः ॥ तत्र खलु यानि तानि मिथ्यात्वं अविरतिः प्रमादः कषायो योगः ॥ तत्र खलु यानि तानि मिथ्यात्वं अविरतिः प्रमादः कषायो योगः ॥ एतानि खलु भदन्त जीवानां ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो बन्धहेतवः कियन्तो भवन्ति ॥ गौतम पञ्च बन्धहेतवः प्रज्ञप्ताः तद्यथा मिथ्यात्वं

ॐ नमो भगवते श्रीमते पुरुषोत्तमाय नमः ॐ नमो भगवते श्रीमते
पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ६ ॥ पञ्चम्यां तिथौ पुरुषोत्तमक्षेत्रे श्रीमान् व्यासो
नाम मुनिरासीत् तेन श्रीमते पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ६ ॥
षष्ठ्यां ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते श्रीमते पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ६ ॥
[illegible] ॐ नमो भगवते श्रीमते पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ६ ॥

ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ བཛྲ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणाय महाकायकायविवरसंस्थितसकलभूतविकृतविकटदंष्ट्रोत्कटभृकुटीतटोद्घाटितनयनविद्युत्पिङ्गलस्फुरितोग्रतेजसे अमोघवज्रतुण्डाय महाबलवीरपुरुषाय महाबलपराक्रमाय महाप्रतिसरमहाविद्याराज्ञि हुं हुं फट् फट् स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोरघोरतरतनुरूपचटचटाहि चटाहि कट कट वज्रं वज्रिणि वज्रशृङ्खलप्रतिसरे हुं हुं फट् फट् स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणाय महाकायकायविवरसंस्थितसकलभूतविकृतविकटदंष्ट्रोत्कटभृकुटीतटोद्घाटितनयनविद्युत्पिङ्गलस्फुरितोग्रतेजसे अमोघवज्रतुण्डाय महाबलवीरपुरुषाय महाबलपराक्रमाय महाप्रतिसरमहाविद्याराज्ञि हुं हुं फट् फट् स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोरघोरतरतनुरूपचटचटाहि चटाहि कट कट वज्रं वज्रिणि वज्रशृङ्खलप्रतिसरे हुं हुं फट् फट् स्वाहा ॥

অথবা ০ উপস্থাপনা প্রাপ্তাপ্তাপ্ত

ઽ૦૦ ૨ીબોલ્લૌ ૫ૌબાલ્લૌ ૭૬૬૬

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनं मे पुष्टिं यशो मे पुष्टिं
प्रयच्छ स्वाहा नमोऽस्तु धनदाय नमो वैश्रवणाय नमो भगवते
महाराजाय नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै मम गृहे धनं पूरय
पूरय चिन्तां दूरय दूरय स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः

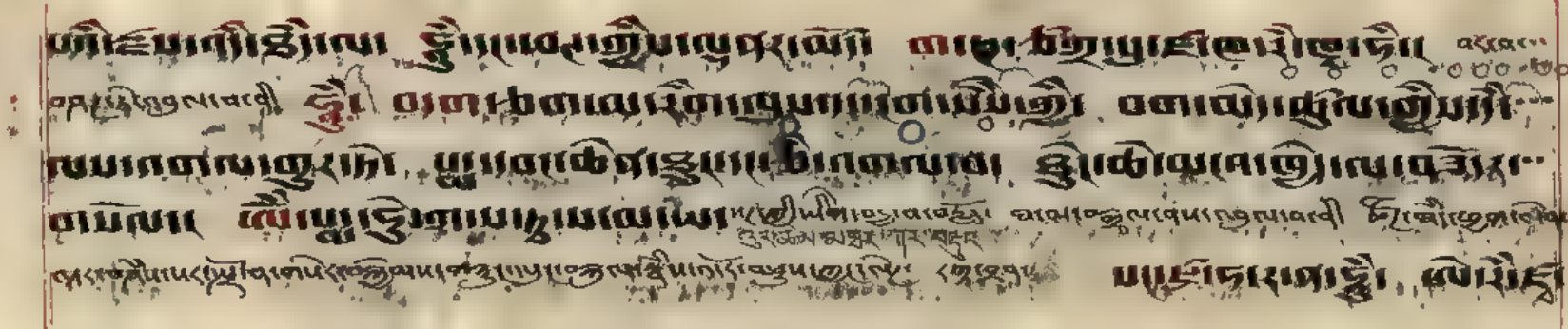

ଓଁ ନମୋ ଭଗବତ୍ୟୈ ଆର୍ଯ୍ୟାଷ୍ଟସାହସ୍ରିକାୟୈ ପ୍ରଜ୍ଞାପାରମିତାୟୈ
ତଦ୍ୟଥା ଓଁ ଅକ୍ଷୟେ ଅକ୍ଷୟବତି ଅକ୍ଷୟଜ୍ଞାନେ ଅକ୍ଷୟଦର୍ଶନେ ଅକ୍ଷୟପ୍ରତିଭାନେ
ଅକ୍ଷୟନିର୍ଯ୍ୟାତେ ଅକ୍ଷୟଧର୍ମଦେଶନାକୁଶଲେ ଅକ୍ଷୟଧର୍ମଦେଶନାପ୍ରତିଭାନେ
ଅକ୍ଷୟଧର୍ମଦେଶନାପ୍ରତିଭାନକୁଶଲେ ଅକ୍ଷୟଧର୍ମଦେଶନାପ୍ରତିଭାନପ୍ରତିଲାଭେ ଅକ୍ଷୟ
ବାଗ୍ଵିଚିତ୍ରତାକୁଶଲେ ଅକ୍ଷୟବାଗ୍ଵିଚିତ୍ରତାପ୍ରତିଲାଭେ ଅକ୍ଷୟବାଗ୍ଵିଚିତ୍ରତାପ୍ରତିଲାଭକୁଶଲେ
ଅକ୍ଷୟନିରୁକ୍ତିପ୍ରତିଲାଭେ ଅକ୍ଷୟନିରୁକ୍ତିପ୍ରତିଲାଭକୁଶଲେ ଅକ୍ଷୟନିରୁକ୍ତିପ୍ରତିଲାଭପ୍ରତିଲାଭେ

ᨿᨠᩋᨿᩁᩋ ᨲᩫᨴᨶᩦᨠᩁᨾᩋᨿᨶᨠᩫᩃᩁᩫᨾᨾᩫᨿᩁᩋ ᨠᩫᨿᩋᨶᩦᩋᨠᩫᨴᨶᩫᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ
ᨴᨠᩫᨿᩋᨠᩫᨴᨶᩫᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨴᨠᩫᨿᩁᩋ ᨲᩫᨶᩦᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ ᨶᨴᩁᩋᨴᩫᨶᩦ
ᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨴᨠᩫᨿᩁᩋ ᨶᩫᨿᩫᨠᩫᨿᩁᩋᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦᨴᨠᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩁᩋ ᨶᨴᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩁᩋ
ᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋ ᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ ᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩁᩋᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ
ᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ ᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩁᩋᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ ᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩁᩋ
ᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ ᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩁᩋᨲᩫᨿᩫᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦᨾᩫᨿᩁᩋᨾᩫᨿᩋᨶᩦ

ગ્રન્થ ૧૦૦ ॥ ૧૦૦ ॥ ૧૦૦ ॥

ઉપાધ્યાયોપાધ્યાયાનુપાધ્યાયાન્ પ્રાણાયુષોઽયોપાધ્યાયાનુપાધ્યાયાન્ કુલાનાઽયો
પાધ્યાયાનુપાધ્યાયાન્ ગણાનુપાધ્યાયાનુપાધ્યાયાન્ સંઘાનુપાધ્યાયાનુપાધ્યા
નાચાર્યોપાધ્યાયાનુપાધ્યાયાન્ મેઽદ્યપ્રભૃતિ યાવત્પ્રાપ્તિ યાવત્સંબોધિ તાવન્મે
તાનુપાધ્યાયાનુપાધ્યાયાન્ ॥ ૧૦૦૦

ཀྱིལ་ཀོར་ཡང་ཐལ་ཁྱབ་བྱའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང

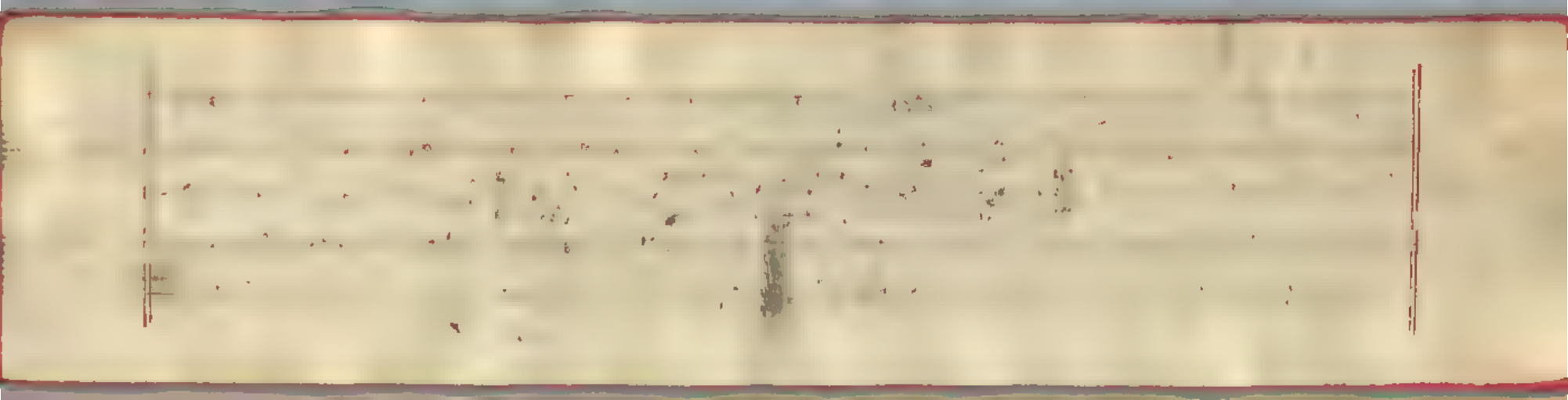

॥ ५८ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणाय
अमोघाय अप्रतिहतशासनाय त्रैलोक्यविजयाय त्रैलोक्यविजयिने महाबलपराक्रमाय
महाभयभैरवभीषणाय महाकालपुरुषाय महाकालपुरुषाय महाकालपुरुषाय
वज्रधराय वज्रपाणये महाबलाय वज्रसत्त्वाय हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा ॥

ગ્રામ ગામોમાં ગામોમાં ગામોમાં

ગણા ઇદુદ્દિદ પ્રાણોપ્રાણાણાદ્દ ણાણોપ્રાણાણાદ્દ ત્યમાણાણુપ્રાણાણીત્યાદ્દેનીદ્દાણુદ્દિણુદ્દિ
ણીકપા ણાદ્દમાણાણાદ્દેત્યણીણાદ્દણાણાણીપાલાપણુત્યાદ્દી ણેત્યણીમણાણાદ્દણુપ્રાણાદ્દેપણેકેકાદ્દેનીદ્દાણુપ્રાણાદ્દી ઇદુદ્દિદ ણેણી
કેપણીણુપ્રાણાણાદ્દા ણાણણાણુપ્રાણાણાદ્દિણા ઇદ્દાણુણીણુપ્રાણાણુપ્રા નદ્દેણેપ્રાદ્દેણાણુપ્રાણી
ણેા નદ્દેણેપ્રાદ્દેણુપ્રાણાણા પત્રણાણુદ્દેણુપ્રાણાદ્દેણા પાત્રુપ્રાણાદ્દેદ્દિણા ણેદ્રેપ્રાદ્દા
ણીપ્રાણીત્યાપણા નદ્દેણાપ્રાદ્દિણા ઇદ્દાણુણીણુપ્રાણાણુપ્રા ણેપાદ્દેણા પ્રાણાણુણાપ્રાણુણા

ॐनमः पुरुषोत्तमाय श्रीमद्गोपालरासरासोत्सवाय गोपीजनवस्त्रहरणाय
नवनीतचौराय शरत्कालदीपोत्तेजिताय पुष्पावचयकारिणीगोपीवस्त्रहरणाय
कालियमर्दनोद्यताय गोवर्धनोद्धरणाय गोपीजनमनोहरणाय गोपीजनपरिवृताय
वंशीवादनतत्पराय श्रीमद्गोपालरासरासोत्सवाय गोपीजनवस्त्रहरणाय नवनी
तचौराय शरत्कालदीपोत्तेजिताय पुष्पावचयकारिणीगोपीवस्त्रहरणाय कालिय
मर्दनोद्यताय गोवर्धनोद्धरणाय गोपीजनमनोहरणाय गोपीजनपरिवृताय वंशी
वादनतत्पराय

ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः
ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः
ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः
ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः
ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः ज्ञानसुधाकरः

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ॥ व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥ अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ॥ युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ॥ पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ॥ सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥ अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ॥ नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥

ઽૈાગપુપા ગપુાતૌાિેાગપાિેપુૈાપુપાપા ઽપાગપૈિાઽુાગપૌાપુપાઽઽપરાપુિા ગૈા
ઽુાણૌાપુિૈપુપાઽૈાગપુપા ઽુાણૌાિેાગપાિેપુૈાપુપાપા ઽપાગપૈિાઽુાગપૌાપુપાપાઽિા
પરાપુિા ગૌાપુપાૌાિેાગપાિેાગપૌાિેપુૈાપુપાપારઽુાઽપુૈાપુઽઽ ગૌાપુપાૌાિેાગપાિેા
ઽુાણાઽુાગપાપુપાગપાિેઽપાઽપુૈાપુઽઽ ગૌાપુપાૌાિેાગપાિેાગપાઽપારઽુાઽપાઽપુૈાપુઽઽપા
ગૌાગૌાઽપુૈાપુપાપુઽપાગપા ગાઽપાઽપુૌાપુપાઽપાગાિેઽપા ાપાગાિેઽુાગપા ઽપુૈાઽપુૈાપુૌા

ཀུན་བཟང་བསྒྲུབ

ཀུན་བཟང་བསྒྲུབ་བཅུད།

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्रीमद्वीरवर्द्धमानस्वामिने प्रीतिगौतमाद्यनेकगणधरसाधुपरमर्षिसन्ततिसमवाप्तप्रकटीकृतनिखिलपदार्थतत्त्वसंदोहस्यास्मिन्नवसर्पिणीकालदुःषमाभिधानपञ्चमारकवर्तिसकलभरतक्षेत्रार्यजनप्रत्यक्षीभूतस्य जिनधर्मतीर्थस्य मूलकर्त्तृपरमपुरुषस्य तीर्थप्रवर्त्तनफलानभिसन्धानादभिव्यक्तविशिष्टतरपुण्यप्रकृतिविपाकोदयसम्पादितसमस्तसुरासुरनरनिकरकृतप्रवरकनकरजतमणिरचितत्रिप्राकारभासमानसमवसरणसिंहासनोपविष्टस्य चतुर्मुखस्य मुखकमलविनिर्गतस्याद्यगणधरश्रीगौतमस्वामिना द्वादशाङ्गचतुर्दशपूर्वगहनतरसूत्रौघविरचनानन्तरमेव समुत्पन्नसकलतदर्थावधारणप्रवीणचतुर्ज्ञानसमुन्नतिसमासादितसर्वाक्षरसन्निपात्यनन्तगमपर्यायवाच्यवाचकशक्तिनियतश्रुतोपबृंहितमतिविकल्पेन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तावग्रहेहावायधारणात्मकचतुर्विधबुद्धिसमन्वितैः सकलतदर्थावधारणप्रवणैः परमर्षिभिः प्रणीतानि यानि पवित्राणि शास्त्राणि तेषां

ॐ नमो वीतरागाय त्रैलोक्यनाथाय त्रैलोक्यहिताय
सर्वज्ञाय सर्वदर्शिने सर्वकर्मक्षयकराय सर्वदुःखक्षयकराय
सर्वसत्त्वहिताय सर्वोत्तमसुखावाप्तिहेतवे श्रीमते ऽरिष्टनेमये
भगवते त्रैलोक्यनाथाय त्रैलोक्यपूजिताय त्रैलोक्यप्रकाशकराय
प्रभवे त्रैलोक्यसर्वसत्त्वानां क्षेमंकराय प्रभवे त्रैलोक्यसर्वसत्त्वानां
शिवंकराय प्रभवे त्रैलोक्यसर्वसत्त्वानां सर्वकार्यसाधकाय प्रभवे
त्रैलोक्यसर्वसत्त्वानां सर्वकामदुघाय प्रभवे त्रैलोक्यसर्वसत्त्वानां
सर्वदुःखक्षयकराय प्रभवे त्रैलोक्यसर्वसत्त्वानां सर्वसुखावाप्तिकराय प्रभवे

ॐ नमः सिद्धेभ्यः सर्वसिद्धेभ्यः परमसिद्धेभ्यः सिद्धेभ्यः सिद्धसाधकेभ्यः सर्वसाधकेभ्यः
सर्वसाधकेभ्यः सर्वदा सर्वकालं सर्वोपद्रवविनाशकेभ्यः श्रीमद्भ्यः
अर्हद्भ्यः सर्वज्ञेभ्यः सर्वदर्शिभ्यः सर्वलब्धिसम्पन्नेभ्यः सर्वसिद्धेभ्यः
वीरेभ्यः वीरवर्धमानेभ्यः वीरसेनेभ्यः वीरसेनवरेभ्यः सुरासुरनमस्कृतेभ्यः
सर्वसाधुभ्यः सर्वसाध्वीभ्यः सर्वश्रावकेभ्यः सर्वश्राविकाभ्यः

ଅଥା ଗଜବାଜାଦିବିଭାଗପ୍ରକାରଃ ଅଷ୍ଟାଙ୍ଗୁଳାଙ୍ଗୁଳୀଗଜଶ୍ରୀଗଜୀ
ଭ୍ରାଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ
ଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ
ଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ
ଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ ଗାଗଜୀଗାଗଜୀ

ꦮꦭꦶꦏꦺꦴꦠꦶꦮꦫꦶꦱꦸꦠꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ ꦏꦶꦠꦤꦶꦏꦺꦴꦠꦶꦮꦫꦶꦱꦸꦠꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ ꦱꦸꦫꦸꦱꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ
ꦱꦸꦤꦤꦶꦮꦶꦥꦸꦠꦫꦮꦏꦤꦺꦴ ꦏꦸꦫꦶꦱꦏꦸꦮꦶꦥꦫꦤꦸꦫꦮꦏꦤꦺꦴ ꦢꦶꦮꦶꦤꦮꦠꦤꦸꦤꦫꦮꦏꦤꦺꦴ
ꦥꦫꦮꦶꦤꦺꦴ ꦮꦸꦫꦸꦏꦸꦮꦶꦥꦸꦠꦫꦮꦏꦤꦺꦴ ꦱꦸꦫꦸꦱꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ ꦮꦭꦶꦏꦺꦴꦠꦶꦮꦫꦶꦱꦸꦠꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ
ꦢꦶꦮꦶꦱꦤꦺꦴ ꦮꦶꦠꦫꦏꦸꦱꦸꦩꦶꦮꦠꦤꦶꦫꦸꦮꦶꦮꦸꦏꦸ ꦮꦭꦶꦏꦺꦴꦠꦶꦮꦫꦶꦱꦸꦠꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ
ꦱꦤꦺꦴ ꦠꦶꦤꦶꦮꦶꦱꦶꦠꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ ꦮꦶꦪꦸꦏꦸꦱꦸꦩꦶꦮꦠꦤꦶꦥꦸꦂꦮꦏꦤꦺꦴ

ཀ་ ཀ་ ཀ་

ཚོགས་ཀྱི་ཞིང་ཆེན་ཞལ་དུགས་སོལ། ཕྱིའབངས་ལེང་ཞི་དགའ་ལྡོག་ཕྱིར། །ཀུན་གྱི་དབང་བསྡུས་ཆོས་ཀྱི་སྐུའབའ། །བདག་ཉིད་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡིན། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན

།།དེ་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡིས་ནི། །ཁྱོད་ཀྱི་ཚེ་ནི་ཐུན་མོང་མིན། །ཞེས་བཀའ་སྩལ་ཏོ། །ཁྱོད་ཀྱི་ཚེ་ནི་ཐུན་མོང་མིན་

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ

།།ཨཱ། །རིངས་དང་ཞབས་བརྟན་གཅིག་གཞི་ལ་བཞག་ནས། །དབུས་བཞག་ལག་གཉིས་ཐལ་མོ་སྦྱར་ཏེ་སྙིང་ཁར་བཞག །སྐྱོང་ཚུལ་ཁྲིམས་ལྡན་ཞིང་ཡིད་ཆེས་ཤིང་། །ཐུབ་པའི་སྲས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་གནས་ཏེ་དགའ། །ཐུབ་པའི་སྲས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་གནས་ཏེ་དགའ། །བསོད་ནམས་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་ཐོབ་ཅིང་ཚེ་ཡང་རིང་བར་འགྱུར། །ཐུབ་པའི་སྲས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་གནས་ཏེ་དགའ

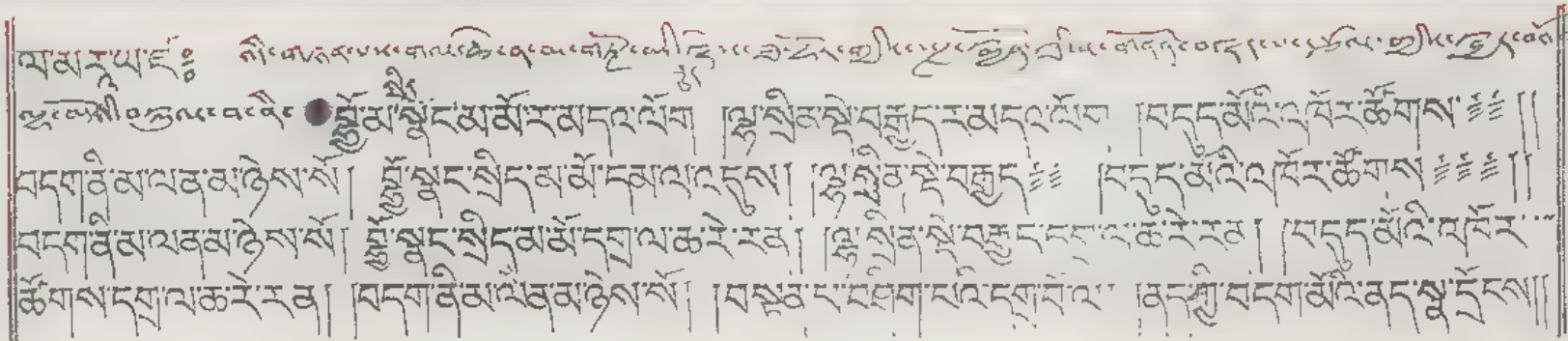

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཡེ་ཤེས་སྐུ་དཀར་ལ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དབུས་མོའི་རིན་ཆེན་སྐུ་སེར་ལ། །བྱང་གི་བདག་མོའི་
འཕགས་སྐུ་དམར་ལ། ཤར་ཀྱི་བདག་མོའི་ཐོར་སྐུ་དཀར་ལ། ཞིང་ཀྱི་སྐྱེལ་བ་དགུ་ལ་སྐྱེས། ཉམ་ཆུང་གི་གཡུ་དབུ་ལུ་སྐྱེད། ཁོག་དང་ཐིག་
འཕྲེལ། མཁའ་འགྲོ་བཅུ་ལེ་མཚུམ་པ་ཁུད། །བཟླས་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཡེ་ཤེས་སྐུ་དཀར་ལ་
ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཡེ་ཤེས་སྐུ་དཀར་ལ། དབུ་ཀྱི་ཤ་ལ་དཔལ་ཆེན་ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་པ། ཞལ་གཡས་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཀུན་
བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཡེ་ཤེས་སྐུ་དཀར་ལ། དབུ་ཀྱི་ཤ་ལ་དཔལ་ཆེན་ཞལ་གསུམ་ཕྱག་དྲུག་པ། ཞལ་གཡས་ཀྱི་ཐོག་ནས་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཡོད་པ་དང་། སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ་བདག་ཀྱང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །རྒྱལ་བའི་སྲས་ཀུན་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཡོད་པ་དང་། སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ་བདག་ཀྱང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །རྒྱལ་བའི་སྲས་ཀུན་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཡོད་པ་དང་། སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ་བདག་ཀྱང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །རྒྱལ་བའི་སྲས་ཀུན་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཡོད་པ་དང་། སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ་བདག་ཀྱང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཐོག་ཏུ་ཡང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཤིང་ཕག་ལོ་ཀ་ཀ་ཡོད་ཅིང་།

ཡ་ཡི་ཡུམ་ཁ་ཅིག་ཀྱིས་མཉེས། ལུའི་གདང་ཐོག་ཏུ་ནི་ཁ་ཅིག་དོ་འགར་བ་ཞུ། གེ་ལེའི་དམ་བཅའ་གི་དགེ་སྡིག་ཚུལ་བདུད་ཅིང་། ཕ་ཡིས་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐུགས་ལ་དབེན་དགེ་རིག་ཏོག། ཅི་ནས་དཀོན་ཐོབ་ཚེ་ཁྱོད་ཀྱི་ཡིད་ཀྱང་ཡིད་ཆེས་ཤིང་། ཕུ་འབྲུག་སོང་བསལ་ཏེ་བ་ཁྱོད་ཀྱི་ཡིད་ཀྱང་ཡིད་ཆེས་ཤིང་། ཕ་ཁེག་ཆ་ཡིན་སྐད་ཅེས་ཡུད་ཙམ་ལ། ། ཁྱོད་ཆང་བཀྲིས་པའི་ཟས་བཅའ་ཐབ་དང་ལྡེ་བ། ཅི་ལ་ཡང་ལངས་ཀྱི་ཡོད་ཀྱང་། དེ་ལས་དེ་བས་ཁྱད་དོ་བཙོ་ཡོད་ཀྱི་ཡོད་ཀྱང་། ལ་ཡི་ཁྱད་ཆོས་དང་ཁྱོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཡོད་ཀྱང་། ཁྱོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཡོད་ཀྱང་།

ཀཀ། ཨོཾ་སྭཱ་སྟི་པ་ཏ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ།། ཨོཾ་སྭཱ་སྟི་ཏེ་ཛོ

དཀའ་ཚོགས་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཇི་ལྟར་ཤིང་གི་གཏུན་ཁུང་ལྷོ་གལ་བའི་ཕྱིར་རོ།། ལོ་ཐུབ་ཀུན་ཏུ་ཡོད་ཀྱང་ལམ་ལྷུར་ལེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཤུག་ལྡུམ་ཆུ་ཀླུང་ཆུ་ཡི་ཕྱིར་རོ།། ཇི་ལྟར་ཁྱོད་ཀྱི་ཚིག་ཀྱང་ཁྱོད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཁོ་བོ་ཅག་ཐོག་མེད་ཀྱི་འཁོར་བ་ན་བཟུང་ཞིང་ཐོག་མེད་ཀྱི་འཁོར་བ་ན་བཏང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། དཔེ་དང་དོན་ཐ་དད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། དཔེ་ཐ་དད་ཀྱང་དོན་གཅིག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།།

།།ཨཱ། །ཨཱ་ཡི་དགུག་བོའི་སྐྱེད་ལས་རིང་ངོ་། དམ་ཀ་དང་ཆགས་སྐྱེ་བ་དཔལ་ཆུས་ལས་དཀྱལ་ལོ་། ལ་དོག་ལ་སྐྱེད་ལ་སྐྱེ་
ཏེ་ཐ་རྒྱེ་ཀུན་ཏུ་ཐ་ཐ་ཐ

ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལས་

ཀུན་བཟང་ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཚིག་ཡིག་ཆ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཀུན་བཟང་ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཚིག་ཡིག་ཆ་ཞེས་བྱ་བ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་ཞལ་ལུང་། ཕན་འདོགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་བསྐྱེད་ཅིང་། ཚེ་ལྷག་པར་རྒྱུན་ཞིང་དཔེ་བྱད་ཡང་ཕུན་
ཚོགས་པ། ཕྱི་ཡམས་ཀྱང་དགེ་ཞིང་རྫས་ཡང་དག་པ། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་
ཕུང་པོ་གཞོན་ནུར་གྱུར་ཅིང་། བདུད་དང་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་བ་ཅི་ཡང་མི་ཟློག་ཅིང་། ཐུབ་པའི་གསུང་ལ་
ཤིན་ཏུ་གུས་པ་མཐོན་པོ་བསྐྱེད་ཅིང་། ཚིག་རྫུན་པ་ཡིད་ཀྱིས་ཀྱང་མི་སྨྲ་བ། ཚིག་ཏུ་བྱ་བ་ལྟ་བུ་ཡིད་ཀྱིས་
ཀྱང་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་པ། ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་པ། ཐུབ་པའི་བསྟན་པ་ལ་ཤིན་ཏུ་དད་པ།

ཞེས་ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་སྐོར་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ

ལ། རྣམ་པ་མང་པོའི་ཐོག་མཐའ་མཐུན་པ་སྐྱེས་པ་སྐྱེས་པ། ཞེས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཐོག་མཐའ་ཞེས་པ་ནི་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་ཞེས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་ཡང་ཐ་དད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡང་ཐོག་མ་ཉིད་ཀྱི་ཐོག་མ་ཡིན་ཞིང་། ཐ་མ་ཡང་ཐ་མ་ཉིད་ཀྱི་ཐ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་ན་ཡང་ཐོག་མ་ཐ་མ་ཞེས་པ་ནི་ཐ་དད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡང་ཐ་མ་ཉིད་ཀྱི་ཐོག་མ་ཡིན་ཞིང་། ཐ་མ་ཡང་ཐོག་མ་ཉིད་ཀྱི་ཐ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་ན་ཡང་ཐོག་མ་ཐ་མ་ཞེས་པ་ནི་ཐ་དད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡང་ཐ་མ་ཉིད་ཀྱི་ཐོག་མ་ཡིན་ཞིང་། ཐ་མ་ཡང་ཐོག་མ་ཉིད་ཀྱི་ཐ་མ་ཡིན་ནོ། །

།ཐོག་ཏོད་བསྐུལ་བའི་ཚེ་མ་རུངས་གསུངས་ཤ་ཟ་གི་ཁ་རྒྱས་པ་ལ་འགྲུགས་ལ་ཐལ་ཕྱེ་མཉམ་ཕྱི་ནས་རྒྱས་སོ། ● ཆུང་། ཡ་ངའི་སྡུང་མ་སྐྱོ་བ་ཆུ་ཚོ་ཆོད་དགོ་དས། ཅ་ལའི་དུག་རྣམས་འཚོ་བས་ཐ་ཟ་འདུག་པ་ཞིག་ཡིན་ཏེ། འགལ་ལ་སྐྱེ་ཁའོ་ཞེས་གསོལ་ཏེ་ཕྱིན་ནས། ཁ་ཟས་ཀྱི་ཐུག་ཏུ་ཕྱིན་ནས་ལུས་སྐྱང་། ལ་ལ་ཅི་སྨོན་ཏུ་ཕ་ཡིད་མཚོ་འཆར། རྟ་ལུ་དང་དོ་བོ་ཆུ་ཚུར་ཤེད་དེ། ལ་ཆེན་ཆ་ཚུན་ཆུང་ཀུ་ཁ་ལོ་ཐལ་ཀྱི་བདག ཧ་ཅུ་རོ་ལ་མོ་དབྱར་ལ་ཀྱི་ལ་ཧོ་དལ་གཡག་ཆ། ཟ་ཀྱེ་གཅུན་ཏུ་ཁ་ཏོག་པ་ཧོ་ཧུ་ཆེ་ཤོ་ཧུ་ཆེ་ཤོ། ཁ་ཤ

ཚེམའང་ཤུགས་འཆང་ལྷུར་འཕྲོག་ལས་སྐྱེ་བས་ཀྱིལ་ཕྱོག། ཅོམ་བསྡུ་ལེབས་ལའི་ལེམས་ཐུན་ཞེའ། ཐ་ཤེ་ཁྱོ་ཁེ་ཁེ་ཁ་བའི་ཤེ་ཁྱོག་བཅོམ་པའི། བཁཞེན་ཆོ་བས་པའི་ཉེས་ཅན་ཤུ་ཁྱོས་ཐོ་ལ། ཤ་ཚོ་ཁྱུམ་ཁེའ་ཁྱིན་པས་ཁེ་ཁེའ་ཁ་ལ། པས་བས་ཆུ་ཤྲུ་ནས་གས་ཁོ་ས་ཁེའ་ཁྱོ། པཤུ་ས། ཅ་ཐའི་ཁས་ཁས་ཁགྱ་བའི་ཞེས་བཅུ་ཅེས་བཐུ། ཁཤུ་ཁྱི་ཁྱུ་ཐས་ཁའི་ཁུ་ཁ་ཁུ་ཁོ་ཁ། ཐཆ་ཁ་ཁེ་ཁ་ཁུ། ཅམ་ཁ་ཁེ་ཁ་ཁེ་ཁོ་ཁོ་ཁ། ཁཤུ་ག་ཁེ་ཁེ་ས་ཁུ་ཁ་ཁེ་ཁ་ཁེ་ཁོ་ཁ། ཁ་ཁ་ཁུ་ཁ་ཁེ་ཁ་ཁེ་ཁ་ཁེ

།ཨཱ། །མེད་སྐྱབ་གཙོས་ལེགས་ཉེས་བཟུགས་མངོན་པ། །འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་པོའི་བདུད་རྩིས་ཚོགས། །བདག་ཏུ་རྟོག་གྱུར་གཅོད་པ་སྐྱབས་ཀྱི་རྒྱལ་ཡུམ་ལ། །ཕྱག་འཚལ་ཞིང་ཡང་དག་ཏུ་ཡང་ཞུ་བ་ཡིན། ཨོཾ་ཀུ་ལ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཨོཾ་ཀུ་ལ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཨོཾ་ཀུ་ལ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། བཛྲ་ཀ་ལི་ཡ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ། ཨོཾ་ཨ་ཀ་ལ་ཝི་ཀ་ལ་ཛ་ཧ་ན་

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः शिवाय नमः पितामहाय नमः प्रजापतिभ्यो नमो देवर्षिभ्यो नमः सर्वविघ्नविनायकेभ्यो नमः सर्वगणाधिपतये नमः सर्वविद्याधिपतये नमः सर्वभूतगणेभ्यो नमः सर्वेभ्यो नमः सर्वेभ्यो नमः सर्व

ઇવાયુષ્યના ત્રણ ભાગોમાંના પહેલા ભાગમાં જ પરભવનું આયુષ્ય બાંધે છે. કોઈ વખત બીજા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત ત્રીજા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત નવમા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત સત્યાવીસમા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત એકાસી ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત બસો બેતાલીસમા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત બસો સત્યાવીસમા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત બસો એકાસીમા ભાગમાં બાંધે છે. કોઈ વખત પોતાના આયુષ્યના છેલ્લા અંતર્મુહૂર્તમાં બાંધે છે. કોઈ વખત તેથી પણ વધારે

ગુણાયા જીવાજીવાદિ ત્રૈલોક્યવિલક્ષણાય કેવલાય પરમાત્મને નમઃ ।
ગણધરદેવાદિ મુનિવરાન્ પ્રતિ શ્રીવર્ધમાનસ્વામિતીર્થંકરપરમદેવૈઃ પ્રણીતં
પ્રવચનસારાભિધાનં શાસ્ત્રં તસ્યાપિ પરમાગમસ્ય મૂલકર્તારં સર્વજ્ઞવીતરાગં
પરમાત્માનં તત્પ્રસાદાત્ તદ્ગુણલબ્ધયે ચ હૃદયે સંસ્થાપ્ય તત્પ્રતિપાદકં
શાસ્ત્રં પ્રારભ્યતે । તત્રાદૌ તાવત્ પ્રણામપૂર્વકં ગ્રન્થપ્રારમ્ભં કરોતિ ।

ॐ ॥ ॥ ॥

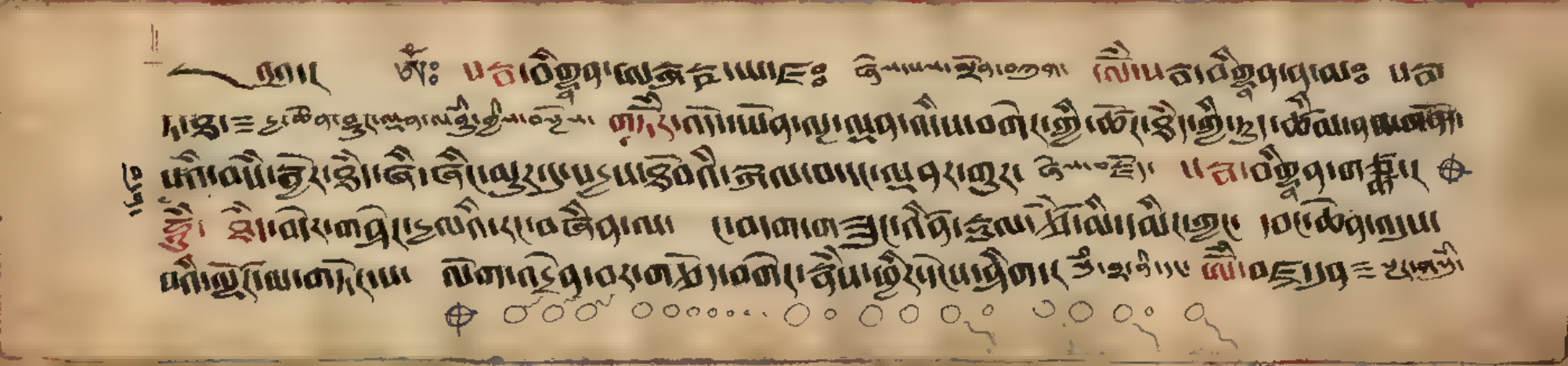

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ಅಯಿತಾವದೆಂತನ್ನಯಾಯುಷ್ಯಾಂತ್ಯದೊಳ್ ಪೊಲ್ಲವಿಯಿಂ ಪೋಗಿ ಪೆಱಂ ಪುಟ್ಟಿ ಪುಟ್ಟಿ ಪೋಗುತ್ತುಂ ಪೆಱಂ
ಪುಟ್ಟಿ ಪುಟ್ಟಿ ಪೋಗುತ್ತುಂ ಪೆಱಂ ಪುಟ್ಟಿ ಪುಟ್ಟಿ ಪೋಗುತ್ತುಂ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमो नारायणाय ऋषय ऊचुः
सूत जानासि भद्रं ते भगवान्सात्वतां पतिः कस्मिन्कर्मण्यस्माभिः स आस्ते कर्म साधयन् ॥ १ ॥
तत्कथा मृतसंस्रावा पुण्या कलिमलापहा संसेव्यमानैर्मुनिभिरभीक्ष्णं ब्रह्मवादिभिः ॥ २ ॥
तां नः समाम्नानवतां धर्मपुत्रः सुतां पतिः शृण्वतां सद्धितां ब्रूहि यदुदेवो विवेष ह ॥ ३ ॥
यदा मुकुन्दो भगवानिमं लोकं जिहासया अवतीर्णः कृतवान्नु कर्माणि सुहृत्तमः ॥ ४ ॥
अथ नः शुश्रूषतां विद्यां पुराणैर्ऋषिभाषितां आख्याहि विश्वं विश्वात्मन्यदुसात्वतवैशसम् ॥ ५ ॥

ॐ ॥

ॐ

ચારિત્રિયા પ્રાણીઓને પણ પરમપદ = મોક્ષ પ્રાપ્ત થયું છે. તો પછી
વક્રજડ સ્વભાવવાળા વાસ્તવિક ચારિત્રિયા તો કેમ ન તરે ? તેમાં
પ્રશ્ન કરે છે = પઠામઃ = કેમ ન તરે ? તેનું કારણ કહે છે - ગુરુ
ઉપર ઉપકાર કરવાની બુદ્ધિ વગેરે ભાવ વિના જે ક્રિયા
કરવામાં આવે છે તે ક્રિયા છોતરાં ખાંડવા જેવી નિષ્ફળ છે. તો
પણ ગુરુ ઉપર ઉપકાર કરવાની બુદ્ધિ વગેરે ભાવ સહિત
ક્રિયા કરવામાં આવે તો તે ક્રિયા ચારિત્રિયાને તારવા સમર્થ
છે. ૧૦૦

[illegible]

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणकरालविषमविषसर्पकुलविनाशकाय तद्यथा ॐ वज्रे वज्रे महावज्रे वज्रधरे वज्रहस्ते वज्रपाणे वज्रतुण्डे वज्रजिह्वे वज्रदंष्ट्रे वज्रभयानकप्रहरणे हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणकरालविषमविषसर्पकुलविनाशकाय तद्यथा ॐ वज्रे वज्रे महावज्रे वज्रधरे वज्रहस्ते वज्रपाणे वज्रतुण्डे वज्रजिह्वे वज्रदंष्ट्रे वज्रभयानकप्रहरणे हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा ॥

॥ ॥

ॐ पुण्याहं

ब्रह्मणेभ्यः वाचयित्वा ददौ ॥ ततो राजानुजग्मुर्हृष्टाः ॥ अथ

ददिया वैरोचनेनाहुतयोऽग्नयानानेजयत्वि वसुरोचनो वैयाघ्रपदोगौतमः डौलोमानुजा
पौलोमेयानग्निष्वात्ता वि ॥ ॐ ॥ नन्दनाग्नयोपवाद्यौर्वजनागताग्नयोगौरीवीतः सिनीवाल्यावोवित्ता
वेधान्नेयानवयोदेवानोवैनोदेवः नदीनाग्नयोनाम्नयोदेवीनाम् सौमेरुकाद्रीनाद्रेनदीयाना व्रतो
व्रतियैनवयोनुजावयुग्नुजा ॥ ॐ ॥ पुतोदेवाद्यैयाद्रेयोनाग्नयोवेधा
ग्नु व्रतियैनाक्षिदेवाग्नयोनुजा देवाग्नयोनाम्नयोजैनाग्नयोवेधाग्नयो हुताग्नयोनाक्षिदेवा

ಅಜೆಯಾಚೈಕಾಶ್ವಾಯ ನೈಮಿಷ್ಯಕ್ಷೇತ್ರೇ ಅಭ್ಯಾಗತಾಯ ಸ್ವಾಗತಾಯಾಸನಾದಿಭಿರಭ್ಯರ್ಚಿತಾಯ ಪಶ್ಚಿಮ
ಪಶ್ಚಿಮಾಯಾಂಜನೇಯಾಯ ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖಾಯ ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖಾಯ ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖಾಯ ಪಶ್ಚಿಮಾಭಿಮುಖಾಯ
ಪಶ್ಚಿಮಾಯಾಂಜನೇಯಾಯ ನೈಮಿಷಕ್ಷೇತ್ರಾಭ್ಯಾಗತಾಯ ಸ್ವಾಗತಾಯಾಸನಾದಿಭಿರಭ್ಯರ್ಚಿತಾಯ ಪಶ್ಚಿಮ
ಪಶ್ಚಿಮಾಯಾಂಜನೇಯಾಯ ನೈಮಿಷಕ್ಷೇತ್ರಾಭ್ಯಾಗತಾಯ ಸ್ವಾಗತಾಯಾಸನಾದಿಭಿರಭ್ಯರ್ಚಿತಾಯ ಪಶ್ಚಿಮ
ಪಶ್ಚಿಮಾಯಾಂಜನೇಯಾಯ ನೈಮಿಷಕ್ಷೇತ್ರಾಭ್ಯಾಗತಾಯ ಸ್ವಾಗತಾಯಾಸನಾದಿಭಿರಭ್ಯರ್ಚಿತಾಯ ಪಶ್ಚಿಮ
ಪಶ್ಚಿಮಾಯಾಂಜನೇಯಾಯ ನೈಮಿಷಕ್ಷೇತ್ರಾಭ್ಯಾಗತಾಯ ಸ್ವಾಗತಾಯಾಸನಾದಿಭಿರಭ್ಯರ್ಚಿತಾಯ ಪಶ್ಚಿಮ

ஸ்ரீ

ஸ்ரீ

ஸ்ரீ

ཀཱལཱི་ཀཱནྟེ་ཨཱཝཱཡཾ་ ཨཱཡཱ་ སྭཱཧཱ། ཨིནྡྲཱཡ་ སྭཱཧཱ། ཨགྣཡེ་ སྭཱཧཱ། ཡམཱཡ་ སྭཱཧཱ། ནཻཪྻཏཡེ་ སྭཱཧཱ། ཝཱརུཎཱཡ་ སྭཱཧཱ། ཝཱཡཝེ་ སྭཱཧཱ། ཀུབེརཱཡ་ སྭཱཧཱ། ཨཱིཤཱནཡ་ སྭཱཧཱ། ཨཱཀཱཤཱཡ་ སྭཱཧཱ། ཨཱདྷཱཡ་ སྭཱཧཱ། ཨནནྟཱ

ಅಷ್ಟಾನಾಮಪಿ ಪ್ರಾಣಾನಾಮೇಕೀಭಾವಾದ್ಭವತ್ಯೇಕಃ ಪ್ರಾಣಃ ತದಾಸ್ಯೈವಂವಿದ ಏಕೀಭವಂತಿ ಪ್ರಾಣಾ ಏಕಮನಸಿ ಸರ್ವೇ ಕರಣಾ ಏಕಧಿಯಿ ಸರ್ವೇ ಭಾವಾ ಏಕಾತ್ಮನಿ ಸರ್ವೇ ಪ್ರಾಣಾ ಏತಸ್ಮಿನ್ನಾತ್ಮನಿ ಸಂಪದ್ಯಂತ ಇತಿ ತಸ್ಮಾದೇವಂವಿದಮಾಪ್ತಕಾಮಮಾತ್ಮಕಾಮಮಕಾಮರೂಪಮೇವಾನುಪಶ್ಯೇತ್ತದೇಷ ಶ್ಲೋಕಃ ಯದಾ ಪಂಚಾವತಿಷ್ಠಂತೇ ಜ್ಞಾನಾನಿ ಮನಸಾ ಸಹ ಬುದ್ಧಿಶ್ಚ ನ ವಿಚೇಷ್ಟತಿ ತಾಮಾಹುಃ ಪರಮಾಂ ಗತಿಮಿತಿ ತಾಂ ಯೋಗಮಿತಿ ಮನ್ಯತೇ ಸ್ಥಿರಾಮಿಂದ್ರಿಯಧಾರಣಾ

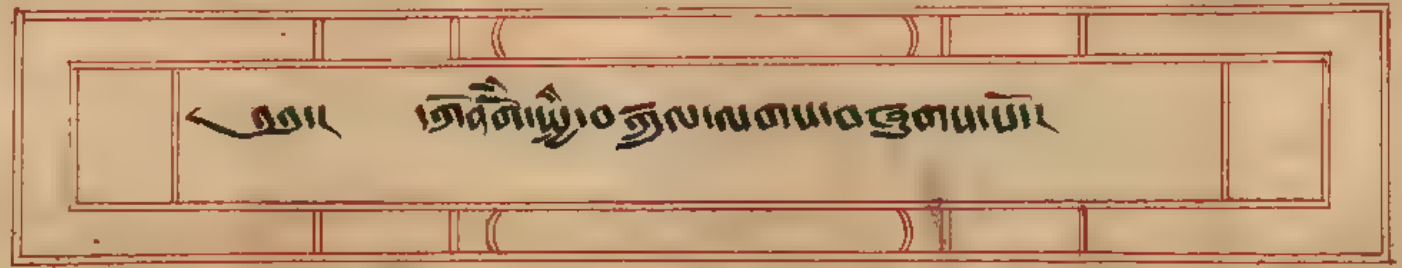

ઉપાધ્યાયશ્રીજીએ પોતાના ગુરુ શ્રીનયવિજયજી મહારાજ પાસે રહીને ન્યાયશાસ્ત્રનો ઊંડો અભ્યાસ કર્યો હતો. તેમણે ન્યાયશાસ્ત્રના ઘણા ગ્રંથો રચ્યા છે. તેમાં ન્યાયખંડખાદ્ય, ન્યાયાલોક, ન્યાયાલોકટીકા, ન્યાયાલોકવિવરણ, ન્યાયાલોકટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પણ, ન્યાયાલોકવિવરણટિપ્પ

ಅಭಯಾಸ್ತುತಿಃ ಅಂಗಾರಕಸ್ತುತಿಃ ॥ ಶ್ರೀವಿಷ್ಣವೇ ನಮಃ ॥ ಅಥ ಶ್ರೀಮದಾಚಾರ್ಯವರ್ಯವಿರಚಿತಾ
ಸ್ತುತಿಃ ॥ ಅಥೋಪಾಸ್ಯಸ್ವರೂಪವರ್ಣನಪೂರ್ವಕಂ ಪ್ರಾರ್ಥನಾಪ್ರಕಾರಃ ॥ ಪ್ರಾತರ್ಮಧ್ಯಾಹ್ನಸಾಯಂ
ಕಾಲೇಷು ಯಾ ಸಂಧ್ಯಾ ಭವತಿ ತಸ್ಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲೇ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಮಿತಿ
ಪಾಠೇ ಯಾಮಲಕ್ಷಣಾಯಾಂ ॥ ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಮಧ್ಯಾಹ್ನೇ ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಚ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ
ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಮಧ್ಯಾಹ್ನೇ ಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಚ ॥ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲೇ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ
ಸಂಧ್ಯಾಯಾಮಿತಿ ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ॥ ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾಕಾಲೇ ಪ್ರಾತಃಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ॥ ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲೇ
ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಮಿತಿ ಮಧ್ಯಾಹ್ನಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ॥ ಮಧ್ಯಾಹ್ನಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಕಾಲೇ
ಮಧ್ಯಾಹ್ನಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ॥ ಮಧ್ಯಾಹ್ನಸಾಯಂಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಮಿತಿ ॥ ಸಂಧ್ಯಾಯಾಂ

ཀུན་ ཕྱིའི་ནང་གི་མི་རྣམས་ཀྱི་ ཤིན་ཏུ་མང་པོ་ལགས་སོ། ། དེ་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་
ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་ཐད་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་

ཀུ་རུ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ ཁཱ་ཧི་ཁཱ་ཧི

ॐ श्रीगणेशाय नमः

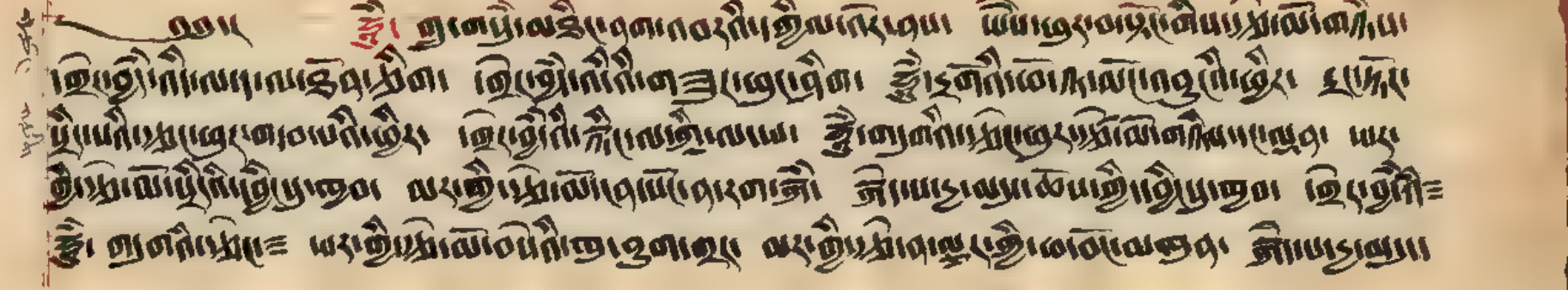

ॐ नमो भगवते श्रीमते श्रीमते श्रीम